My Country *My Life* : लोकार्पण समारोह* में व्यक्त विचार

''मुझे प्रसन्नता है कि लालकृष्ण आडवाणीजी, जो वर्तमान समय के एक सुविख्यात एवं गणमान्य व्यक्ति हैं और जिनमें विचारों की स्पष्टता के असीम गुण और प्रभावशाली विश्लेषणात्मक योग्यता विद्यमान है, ने अपने संपूर्ण जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए अपने चारों ओर घटित विभिन्न घटनाओं पर खुलकर विचार व्यक्त किए हैं। उनकी पुस्तक 'माइ कंट्री माइ लाइफ' उनके 80 वर्षों के आश्चर्यजनक अनुभवों का एक संकलन है जो भारत के एक अरब लोगों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत के प्रति उनके विस्तृत दृष्टिकोण का खुलासा करने में सहायक होगा। मैं आडवाणीजी की इस बात के लिए सराहना करता हूँ, जब वे कहते हैं, ''पाठकगण मेरे दृष्टिकोण/विचारों और उल्लिखित घटनाओं एवं मुद्दों से सहमत अथवा असहमत हो सकते हैं। यह उनका अधिकार है। यद्यपि पाठकगण एक ऐसे लेखक को पाएँगे जिसने इन घटनाओं के बारे में और स्वयं अपने विषय में बेबाक और ईमानदारी से प्रकाश डाला है।'' **—डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, भारत के पूर्व राष्ट्रपति**

❖

''आडवाणीजी ने यह पुस्तक लिखकर एक साहसिक कार्य किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक समाज और आनेवाली पीढ़ियों के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होगी।'' **—भैरों सिंह शेखावत, भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति**

❖

''आडवाणीजी ने यह पुस्तक एक स्वयंसेवक की भाँति लिखी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का एक अच्छा स्वयंसेवक प्रत्येक कार्य-क्षेत्र में, जहाँ वह सक्रिय है, एक देशभक्त कार्यकर्ता की भूमिका निभाता है। सार्वजनिक जीवन में एक स्वयंसेवक का जीवन जीना बहुत कठिन है, लेकिन उसको जीना ही चाहिए। और श्री आडवाणी ने ये दोनों काम बखूबी किए हैं।'' **—मोहनराव भागवत, सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ**

❖

''मैं मानता हूँ कि आडवाणीजी आज के भारत में सर्वाधिक गलत ढंग से समझे जाने और गलत ढंग से पहचाने जानेवाले नेताओं में से एक हैं। वह मस्जिदों को तोड़ने या ऐसी बातों से बहुत दूर हैं। यह पुस्तक एक पथ-प्रदर्शक है और विगत अनेक दशकों के भारतीय राजनीति तथा सामाजिक इतिहास में एक बहुमूल्य योगदान है।'' **—जसवंत सिंह, नेता प्रतिपक्ष (राज्यसभा)**

❖

''आडवाणीजी ईमानदारी, प्रामाणिकता और सार्वजनिक जीवन में शुचिता वाले व्यक्ति हैं। वे वस्तुनिष्ठ आकलन करते हैं और उनकी शक्ति इसमें निहित है कि वे प्रत्येक संकट को एक चुनौती के रूप में लेते हैं, और प्रत्येक चुनौती को एक जिम्मेदारी के रूप में देखते हैं, जिसे वह तत्परता से निभाते हैं। इस पुस्तक के शीर्षक से मेरी थोड़ी असहमति है, क्योंकि यह देश उनका जीवन रहा और उनका जीवन देश बन गया। यह पुस्तक अधूरी भी है, क्योंकि अभी इसमें एक और अध्याय लिखे जाने की जरूरत है। वह अध्याय आडवाणीजी के प्रधानमंत्री बनने के बाद लिखा जाएगा।'' **—चो. रामस्वामी, प्रसिद्ध तमिल पत्रिका *'तुगलक'* *के संपादक***

---

* अंग्रेजी पुस्तक 'माइ कंट्री माइ लाइफ' का लोकार्पण 19 मार्च, 2008 को नई दिल्ली में पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के कर-कमलों से संपन्न हुआ।

कुछ प्रमुख समीक्षकीय उद्‍गार

‘‘आडवाणीजी एक अद्‍भुत कथाकार हैं और क्या लाजवाब कहानियों का संग्रह उन्होंने बनाया है! अकसर उनके अंदर का विद्वान् उनके राजनीतिज्ञ पर हावी हो जाता है और यही पर्याप्त है उनके कार्य की गुणवत्ता को आकाश की ऊँचाइयों तक ले जाने के लिए। जो स्थान महर्षियों में भृगु का है और पर्वतों में हिमालय का, ‘माइ कंट्री माइ लाइफ’ का वही स्थान संस्मरणों में है।’’ **—एम.वी. कामथ, *‘ऑर्गेनाइजर’* में**

‘‘कुछ राजनीतिक संस्मरण काल्पनिक सच गढ़ने के प्रयास होते हैं। यह एक ऐसी उद्घोषणा है जो ‘मुसकरानेवाले कट्‍टर व्यक्ति’ आडवाणीजी की काल्पनिकता से उन्हें मुक्त करती है। डेल कारनेगी की एक पुस्तक ‘हाउ टु विन फ्रेंड्स ऐंड इन्फ्लूएंस पीपुल’ ने उनका जीवन बदल दिया। ‘माइ कंट्री माइ लाइफ’ में आडवाणीजी, बगैर तर्कों को गँवाए निश्चित रूप से दोस्तों को जीतेंगे तथा भारत को प्रभावित करेंगे।’’

—आर. प्रसन्नराजन, *‘इंडिया टुडे’* में

‘‘आडवाणीजी की यह आत्मकथा उपन्यास की तरह रोचक है। भारत की समसामयिक राजनीति पर इतना विशद और इतना दो टूक ग्रंथ मुझे कोई दूसरा नहीं दिखा। इस ग्रंथ में आडवाणीजी ने भावी भारत का जैसा शक्तिशाली, लेकिन उदार नक्शा प्रस्तुत किया है वह उनकी दृष्टिसंपन्नता और दृढ़ता का द्योतक है। इस ग्रंथ में अनेक प्रेरणादायक प्रसंग हैं। यह ऐसी आत्मकथा है जिसमें आत्मश्लाघा कहीं भी नहीं दिखती।’’

—वेदप्रताप वैदिक, वरिष्ठ पत्रकार

‘‘एक वर्तमान राजनीतिज्ञ, विशेषकर आडवाणीजी जैसे उच्च व्यक्तित्व के धनी जिन्होंने अयोध्या आंदोलन और छद्‍म पंथनिरपेक्षता के अपने प्रतिपादन से भारतीय राजनीति के निर्धारित पैरामीटर को मूलभूत रूप से परिवर्तित किया है, के लिए यह एक साहसिक बात है। ‘माइ कंट्री माइ लाइफ’ प्रसिद्ध राजनीतिक आत्मकथा लेखकों की सूची में एक महान् संस्करण ही नहीं है, अपितु स्वतंत्रता पश्चात् भारतीय राजनीति का एक बेमिसाल लेखा-जोखा है। मैं प्रत्येक सुविज्ञ, चैतन्य और प्रबुद्ध भारतीय से इसे तन्मयता से पढ़ने को कहूँगा।’’ **—चंदन मित्रा, *‘पायनियर’* में**

‘‘एल.के. आडवाणीजी की आत्मकथा दो तरह से पढ़ी जा सकती है। पहला, यह आधुनिक इतिहास के एक प्राथमिक स्रोत के रूप में जो एक ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखी गई है जो स्वयं प्रमुख नीति निर्णायक रहा। दूसरा, इस विस्तृत पुस्तक को एक ऐसे व्यक्ति के मस्तिष्क के रोड मैप के रूप में, जिसने भारत के राजनीतिक रूप-रंग को नया आकार दिया।’’ **—स्वप्न दासगुप्ता, *‘तहलका’* में**

‘‘लालकृष्ण आडवाणीजी उन विरले राजनीतिज्ञों में से हैं जो भारतीय इतिहास के वृत्तांत को कुछ अनोखे ढंग से प्रभावित करने का श्रेय ले सकते हैं।’’ **—प्रताप भानु मेहता, *‘इंडियन एक्सप्रेस’* में**

‘‘आडवाणीजी की खूबियाँ और कमजोरियाँ उनकी पुस्तक में समाहित हैं। यह पढ़ने योग्य, लाभप्रद और अकसर उनके राजनीतिक कैरियर का ब्योरा है। दिल से लिखे गए यह आधे संस्मरण और आधा घोषणापत्र है।’’

—वीर सांघवी, *‘हिंदुस्तान टाइम्स’* में